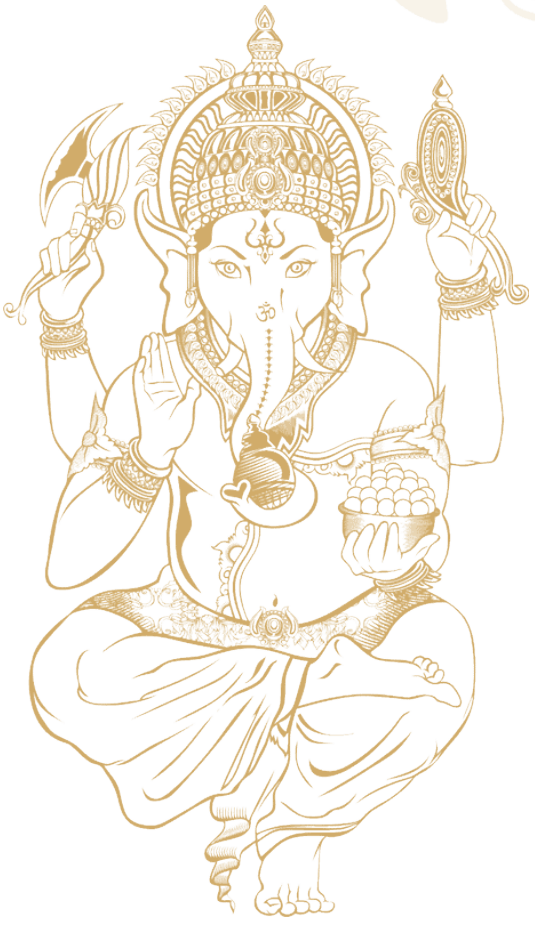

Mr.shivalik

Ms.mansinpriya

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120204303

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/05/1994	जन्म तिथि	05/10/1998
मंगलवार	दिन	सोमवार
घंटे 17:34:00	जन्म समय	19:55:00 घंटे
घटी 31:23:52	जन्म समय(घटी)	35:29:47 घटी
India	देश	India
Patna	स्थान	Ranchi
25:37:00 उत्तर	अक्षांश	23:22:00 उत्तर
85:12:00 पूर्व	रेखांश	85:20:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:10:48	स्थानिक संस्कार	00:11:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:00:27	सूर्योदय	05:41:45
18:31:50	सूर्यास्त	17:32:21
23:46:56	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:13

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 3वर्ष 9मा 16दि	27:40:24	तुला	लग्न	वृष	02:51:58	शनि 2वर्ष 6मा 11दि
बुध	09:18:42	वृष	सूर्य	कन्या	18:18:26	शुक्र
11/03/2017	00:10:12	वृश्चि	चंद्र	मीन	14:53:24	17/04/2025
11/03/2034	06:38:19	मेष	मंगल	सिंह	04:59:14	17/04/2045
बुध 07/08/2019	01:17:07	मिथु	बुध	कन्या	25:37:18	शुक्र 17/08/2028
केतु 03/08/2020	13:07:11	तुला व	गुरु व	कुंभ	26:44:51	सूर्य 17/08/2029
शुक्र 04/06/2023	10:20:41	मिथु	शुक्र	कन्या	11:56:33	चन्द्र 18/04/2031
सूर्य 10/04/2024	17:54:10	कुंभ	शनि व	मेष	07:43:56	मंगल 17/06/2032
चन्द्र 09/09/2025	00:02:22	वृश्चि व	राहु व	सिंह	07:01:11	राहु 17/06/2035
मंगल 06/09/2026	00:02:22	वृष व	केतु व	कुंभ	07:01:11	गुरु 15/02/2038
राहु 26/03/2029	02:20:08	मक व	हर्ष व	मक	15:02:46	शनि 17/04/2041
गुरु 02/07/2031	29:20:48	धनु व	नेप व	मक	05:33:26	बुध 16/02/2044
शनि 11/03/2034	02:43:37	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	12:08:44	केतु 17/04/2045

लग्न-चलित

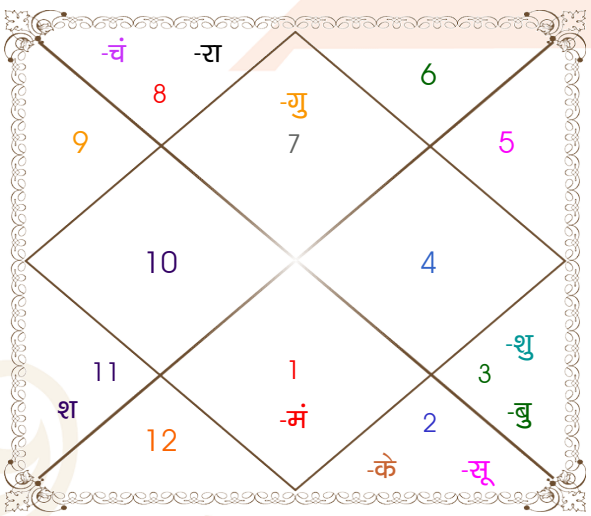

लग्न-चलित

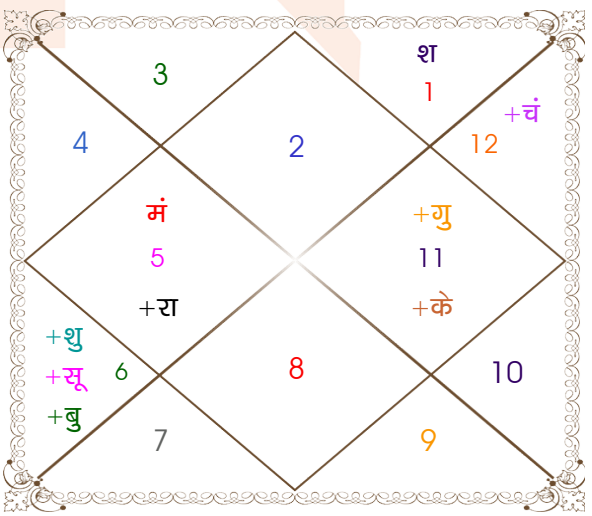

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	गौ	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	गुरु	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	मीन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.00		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

डतणैपअंसपा का वर्ग सर्प है तथा डेण्उंदेपदचतपलं का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतणैपअंसपा और डेण्उंदेपदचतपलं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

डतणैपअंसपा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल डतणैपअंसपा कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

सप्तमो यदा भौमः गुरूणां च निरीक्षिता।
तदास्तु सर्वसौख्यं च मंगली दोषनाशकृत्।।

सप्तम मंगल को गुरु देखता हो मंगली दोष कट जाता है।

क्योंकि डतणैपअंसपा कि कुण्डली में सप्तम मंगल को गुरु देखता है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्उंदेपदचतपलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु डेण्उंदेपदचतपलं कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डतणैपअंसपा तथा डेण्उंदेपदचतपलं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।